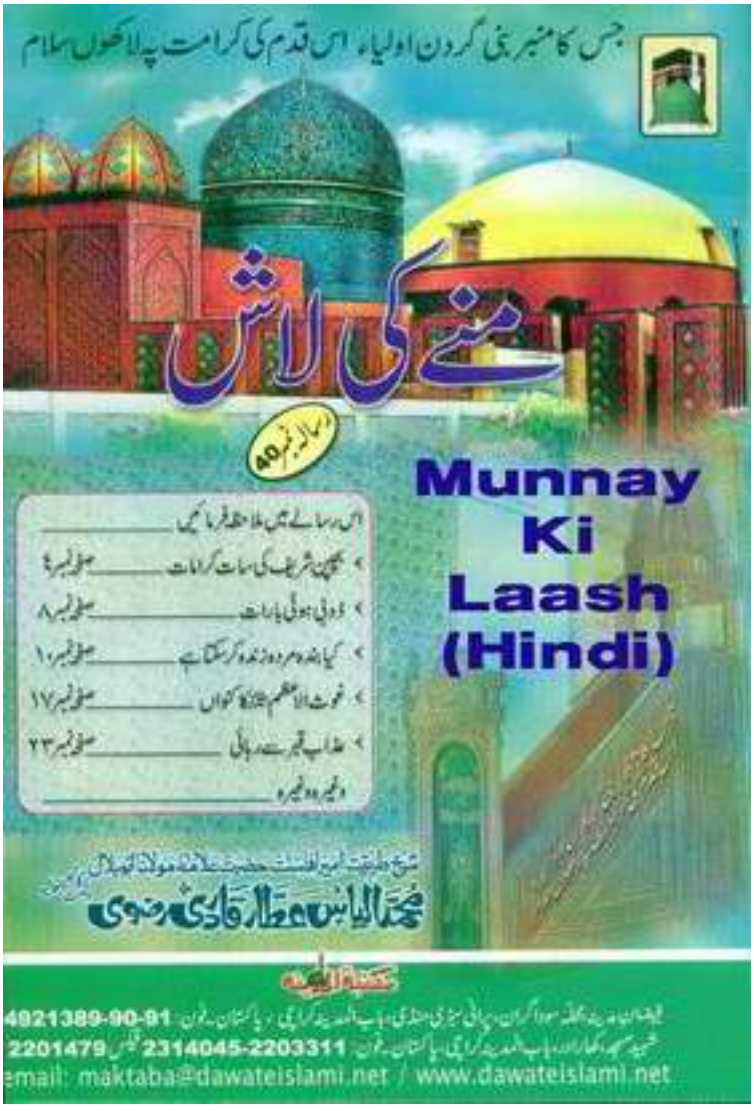

جس کا منبر بنی گردن اولیاء اس قدم کی کرامت پہ لاکھوں سلام
منے کی لاش
Munnay Ki Laash (Hindi)
محمد الیاس عطار قادری رضوی
4021389-90-91
2314045-2203311
2201479
email: maktaba@dawateislami.net / www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۙ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ۙ

मुन्ने की लाश

शैतान लाख सुस्ती दिलाए, येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये, इन शाअल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप के दिल में ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की महब्बत मज़ीद बढ़ जाएगी ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोहतरम, सुल्ताने ज़ी हशम, सरापा जूदो करम, हबीबे मुकर्रम, महबूबे रब्बे अकरम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा ।

(सुनने इब्ने माजा, स-फ़हा:65, बाबुल मदीना कराची)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ानक़ाह में एक बा पर्दा ख़ातून अपने मुन्ने की लाश चादर में लिपटाए, सीने से चिमटाए ज़ारो क़तार रो रही थी । इतने में एक ''म-दनी मुन्ना'' दौड़ता हुवा आता है और हमदर्दाना लहजे में उस

ख़ातून से रोने का सबब दरयाफ़्त करता है। वोह ख़ातून रोते हुए केहती है, बेटा ! मेरा शौहर अपने लख़्ते जिगर के दीदार की ह़सरत लिये दुन्या से रुख़्स़त हो गया है। येह बच्चा उस वक़्त पेट में था और अब येही अपने बाप की निशानी और मेरी ज़िन्दगानी का सरमाया था, येह बीमार हो गया, मैं इसी ख़ानकाह में दम करवाने ला रही थी कि रास्ते में इस ने दम तोड़ दिया है। मैं फिर भी बड़ी उम्मीद ले कर यहां ह़ाज़िर हो गई कि इस ख़ानक़ाह वाले बुज़ुर्ग की विलायत की हर त़रफ़ धूम है और उन की निगाहे करम से अब भी बहुत कुछ हो सकता है मगर वोह मुझे स़ब्र की तल्क़ीन कर के अन्दर तश्रीफ ले जा चुके हैं, येह केह कर ख़ातून फिर रोने लगी। म-दनी मुन्ने का दिल पिघल गया और उस की रह़मत भरी ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ खेलने लगे, "मोह़तरमा ! आप का मुन्ना मरा हुवा नहीं बल्कि ज़िन्दा है, देखो तो सही वोह ह़-र-कत कर रहा है।" दुख्यारी मां ने बेताबी के साथ अपने मुन्ने की लाश पर से कपड़ा उठा कर देखा तो वोह सचमुच ज़िन्दा था और हाथ पैर हिला कर खेल रहा था। इतने में ख़ानक़ाह वाले बुज़ुर्ग अन्दर से वापस तश्रीफ़ लाए,

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

बच्चे को ज़िन्दा देख कर सारी बात समझ गए और लाठी उठा कर येह केहते हुए म-दनी मुन्ने की त़रफ़ लपके कि तूने अभी से तक़्दीरे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के सरबस्ता राज़ खोलने शुरू अ़ कर दिये हैं!" म-दनी मुन्ना वहां से भाग खड़ा हुवा और वोह बुज़ुर्ग उस के पीछे दौड़ने लगे। "म-दनी मुन्ना" यकायक क़ब्रिस्तान की त़रफ़ मुडा और बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगा, ऐ क़ब्र वालो! मुझे बचाओ! तेज़ी से लपकते हुए बुज़ुर्ग अचानक ठिठक कर रुक गए क्यूं कि क़ब्रिस्तान से तीन सौ मुर्दे उठ कर उसी "म-दनी मुन्ने" की ढाल बन चुके थे और वोह "म-दनी मुन्ना" दूर खड़ा अपना चांद सा चेहरा चमकाता मुस्करा रहा था। उस बुज़ुर्ग ने बड़ी ह़सरत के साथ "म-दनी मुन्ने" की त़रफ़ देखते हुए कहा, बेटा! हम तेरे मरतबे को नहीं पहुंच सकते। इस लिये तेरी मरज़ी के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म करते हैं। आप जानते हैं वोह म-दनी मुन्ना कौन था? उस म-दनी मुन्ने का नाम ***अ़ब्दुल क़ादिर*** था और आगे चल कर वोह ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के लक़ब से मश्हूर हुए और वोह बुज़ुर्ग उन के नाना जान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है ।

सौमई عَلَيْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی थे । (अल ह़क़ाइक़ फ़िल ह़दाइक़)

क्यूं न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबुल क़ासिम है

क्यूं न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बचपन शरीफ़ की सात करामात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم मादर ज़ाद वली थे ।

(1) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अभी अपनी मां के पेट में थे और मां को जब छींक आती और इस पर जब वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه केहतीं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पेट ही में जवाबन يَرْحَمُكَ الله केहते । (2) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه यकुम र–मज़ानुल मुबारक बरोज़ पीर सुब्ह़े स़ादिक़ के वक़्त दुन्या में जल्वा गर हुए उस वक़्त होंट आहिस्ता आहिस्ता ह़–र–कत कर रहे थे और अल्लाह, अल्लाह की आवाज़ आ रही थी । (3) जिस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत हुई उस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दियारे विलादत जीलान शरीफ़ में ग्यारह सौ बच्चे

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

पैदा हुए वोह सब के सब लड़के थे और सब वलिय्युल्लाह बने। (4) ग़ौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने पैदा होते ही रोज़ा रख लिया और जब सूरज ग़ुरूब हुवा उस वक़्त मां का दूध नोश फ़रमाया। सारा महीना आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येही मा'मूल रहा। (5) पांच बरस की उम्र में जब पहली बार बिस्मिल्लाह पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुज़ुर्ग के पास बैठे तो **اَعُوْذُ** और ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ कर सूरए फ़ातेहा और अलिफ़ लाम मीम से ले कर अठ्ठारह पारे पढ़ कर सुना दिये। उस बुज़ुर्ग ने कहा, बेटे और पढ़िये! फ़रमाया, बस मुझे इतना ही याद है क्यूं कि मेरी मां को भी इतना ही याद था। जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक़्त वोह पढ़ा करती थीं। मैं ने सुन कर याद कर लिया था। (6) जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लड़कपन में खेलने का इरादा फ़रमाते, ग़ैब से आवाज़ आती, ऐ अ़ब्दल क़ादिर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)! हम ने तुझे खेलने के वासिते नहीं पैदा किया (7) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मद्रसे में तशरीफ़ ले जाते तो आवाज़ आती, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली को जगह दे दो।"

(कुतुबे कसी़रा)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।

नबवी मींह अ़लवी फ़स्ल बतूली गुलशन

हसनी फूल हुसैनी है महकना तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

करामत की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात करामाते औलिया के मुआ़मले में शैत़ान के वस्वसे में आ कर करामात को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलने लगता है और यूं गुमराह हो जाता है। याद रखिये ! करामत केहते ही उस ख़िर्क़े आ़दत बात को जो अ़क़्लन मुह़ाल या'नी ज़ाहिरी अस्बाब के ज़रीए इस का सुदूर ना मुम्किन हो मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से ऐसी बातें बसा अवक़ात स़ादिर हो जाती हैं। नबी से क़ब्ल अज़ ए'लाने नुबुव्वत ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उन को इरहास़ केहते हैं। और ए'लाने नुबुव्वत के बा'द स़ादिर हों तो मो'जिज़ा केहते हैं। आ़म मो'मिनीन से अगर ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तो उसे मऊ़नत और वली से ज़ाहिर हों तो करामत केहते हैं। नीज़ काफ़िर या फ़ासिक़ से कोई ख़िर्क़े आ़दत ज़ाहिर हो तो उसे इस्तिदराज केहते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

अक़्ल को तन्क़ीद से फ़ुरसत नहीं
इश्क़ पर आ'माल की बुन्याद रख

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

डूबी हुई बारात

एक बार सरकारे बग़दाद हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم दरया की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। वहां एक नव्वे साल की बुढ़िया को देखा जो ज़ारो क़ितार रो रही थी। एक मुरीद ने बारगाहे ग़ौसिय्यत में अर्ज़ की, या मुर्शिदी ! इस ज़ईफ़ा का एक इकलौता ख़ूबरू बेटा था। बेचारी ने उस की शादी रचाई दूल्हा निकाह कर के दुल्हन को इसी दरया में किश्ती के ज़रीए अपने घर ला रहा था कि किश्ती उलट गई और दूल्हा दुल्हन समेत सारी बारात डूब गई। इस वाक़िए को आज बारह बरस गुज़र चुके हैं मगर मां का जिगर है, बेचारी का ग़म जाता नहीं। येह रोज़ाना यहां दरया पर आती है और बारात को न पा कर रो धो कर चली जाती है। हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم को इस ज़ईफ़ा पर बड़ा तरस आया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अल्लाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ के लिये हाथ उठा दिये। चन्द मिनट तक कुछ भी ज़ुहूर न हुवा। बेताब हो कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस क़दर ताख़ीर क्यूं ? इर्शाद हुवा, ऐ मेरे प्यारे ! येह ताख़ीर ख़िलाफ़े तक़्दीर व तदबीर नहीं है। हम चाहते तो एक हुक्मे कुन से तमाम ज़मीनो आस्मान पैदा कर देते मगर बतक़ज़ाए हिक्मत छे दिन में पैदा किये। बारात को डूबे बारह साल बीत चुके हैं। अब न वोह किश्ती बाक़ी रही है न ही उस की कोई सुवारी, तमाम इन्सानों का गोश्त वग़ैरा भी दरयाई जानवर खा चुके हैं, रेज़ा रेज़ा को अज्ज़ाए जिस्म में इकट्ठा करवा कर दोबारा ज़िन्दगी के मरहले में दाख़िल कर दिया है, अब उन की आमद का वक़्त है। अभी येह कलाम इख़्तिताम को भी न पहुंचा था कि यकायक वोह किश्ती अपने तमाम तर साज़ो सामान के साथ बमअ़ दूल्हा दुल्हन व बराती सत्हे आब पर नुमूदार हो गई और चन्द ही लम्हों में किनारे आ लगी। तमाम बाराती सरकारे बग़्दाद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से दुआएं ले कर ख़ुशी ख़ुशी अपने घर पहुंचे। इस करामत को सुन कर बे शुमार कुफ़्फ़ार ने आ कर सय्यिदुना ग़ौसुल

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़बूल किया। (सुल्तानुल अज़्कार फ़ी मनाक़िबे ग़ौसुल अबरार)

निकाला था पहले तो डूबे हुओं को
और अब डूबतों को बचा ग़ौस से आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या बन्दा मुर्दा ज़िन्दा कर सकता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक मौतो हयात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इख़्तियार में है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को मुर्दे जिलाने की ताक़त बख़्शे तो उस के लिये कोई मुश्किल बात नहीं है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से किसी और को हम मुर्दा ज़िन्दा करने वाला तस्लीम करें तो इस से हमारे ईमान पर कोई असर नहीं पड़ता। अगर शैतान की बातों में आ कर किसी ने अपने ज़ेहन में येह बिठा लिया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी और को मुर्दा ज़िन्दा करने की ताक़त ही नहीं दी तो इस का येह नज़रिया यक़ीनन हुक्मे क़ुरआनी के ख़िलाफ़ है, देखिये ! क़ुरआने पाक हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मरीज़ों को शिफ़ा देने और मुर्दे ज़िन्दा करने की त़ाक़त का स़ाफ़ स़ाफ़ ए'लान कर रहा है। जैसा कि पारह 3 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 49 में ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह इर्शाद नक़्ल किया गया है :-

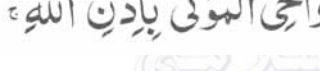

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धों और सफ़ेद दाग़ वाले (या'नी कोढ़ी) को और मैं मुर्दे जिलाता हूं अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म से।

www.dawateislami.net

उम्मीद है शैत़ान का वस्वसा जड़ से कट गया होगा, क्यूं कि मुसल्मान का क़ुरआने पाक पर ईमान होता है और वोह हुक्मे क़ुरआन के ख़िलाफ़ कोई दलील तस्लीम करता ही नहीं। बहर ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मक़्बूल बन्दों को त़रह़ त़रह़ के इख़्तियारात से नवाज़ता है और उस से ऐसी बातें स़ादिर होती हैं जो अ़क़्ले इन्सानी की बुलन्दियों से वराउल वरा होती हैं। यक़ीनन अहलुल्लाह के तस़र्रुफ़ात व इख़्तियारात की बुलन्दी को दुन्या वालों की परवाज़े अ़क़्ल छू भी नहीं सकती।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

साइन्सदान की नज़र

दौरे ह़ाज़िर का सब से बड़ा साइन्सदान आइन स्टाइन केह गया है, "मैं ने रेडियो, दूर बीन के ज़रीए एक ऐसा कहकशां तो देख लिया है जो ज़मीन से दो करोड़ नूरी साल दूर है या'नी रौशनी जो फ़ी सेकन्ड एक लाख छियासी हज़ार मील त़य करती है, वहां दो करोड़ साल में पहुंचेगी मगर जहां तक काएनात की सरह़दें मा'लूम करने का तअ़ल्लुक़ है अगर मेरी उ़म्र एक मिल्यन या'नी दस लाख बरस भी हो जाए तब भी दरयाफ़्त नहीं कर सकता।" साइन्सदान के बरअ़क्स ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के वली ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की अ़ज़्मतो शान देखिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :-

نظرت الیٰ بلاد اللّٰہ جمعا کخردلۃ علیٰ حکم التصال

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तमाम शहर मेरी नज़र में इस त़रह़ हैं जैसे हथेली में राई का दाना।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में अ़र्ज़ करते हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ का है साया तुझ पर
बोल बाला है तेरा ज़िक्र है ऊं चा तेरा

(हदाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बद अ़क़ीदा क़ातिल की सज़ा

अब विसाल शरीफ़ के त़वील अ़रसे के बा'द हिन्दोस्तान में रूनुमा होने वाला एक ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ पढ़िये और झूमिये। रनजीत सिंघ के दौरे हुकूमत की बात है, एक नाम निहाद मुसल्मान जो करामाते औलिया का मुन्किर था। शौमई क़िस्मत से एक शादीशुदा हिन्दवानी को दिल दे बैठा। एक बार हिन्दू अपनी बीवी को मयके पहुंचाने के लिये घर से बाहर निकला, इधर उस बदबख़्त आ़शिक़ पर शहवत ने ग़-लबा किया। चुनान्चे उस ने उन का पीछा किया और एक सुनसान मक़ाम पर उस ने दोनों को घेर लिया, वोह दोनों पैदल थे और येह घौड़े पर सुवार था। इस ने हमदर्दी का इज़हार करते हुए सुवारी की पेशकश की मगर हिन्दू ने इन्कार किया, वोह इस्रार करने लगा कि

अच्छा औ़रत ही को पीछे बैठने की इजाज़त दे दो कि येह बेचारी थक जाएगी। हिन्दू को उस की निय्यत पर शुबा हो चला था, लिहाज़ा उस ने कहा, तुम ज़मानत दो कि किसी क़िस्म की ख़ियानत किये बिग़ैर मेरी बीवी को मन्ज़िल पर पहुंचा दोगे। उस ने कहा कि यहां जंगल मे ज़ामिन कहां से लाऊं ? औ़रत बोल उठी, "मुसल्मान ग्यारहवीं वाले बड़े पीर सा़हिब को बहुत मानते हैं तुम उन्हीं की ज़मानत दे दो।" वोह अगर्चे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के तसर्रुफ़ात का क़ाइल नहीं था मगर येह सोच कर कि हां केह देने में क्या जाता है उस ने हां केह दिया। जूं ही औ़रत घौड़े पर सुवार हुई उस ज़ालिम ने तल्वार से उस के शौहर की गरदन उड़ा दी और घौड़े को एढ़ लगा दी। औ़रत ग़म से निढाल और सहमी हुई बार बार मुड़ कर पीछे देखे जा रही थी। उस ने कहा कि बार ार पीछे देखने से कुछ ह़ासिल नहीं होगा, तुम्हारा शौहर अब वापस नहीं आ सकता। उस ने कपकपाती हुई आवाज़ में कहा, मैं तो बड़े पीर सा़हिब को देख रही हूं। इस पर उस ने एक क़हक़हा लगा कर कहा कि बड़े पीर सा़हिब को तो फ़ौत हुए कई सौ साल गुज़र चुके हैं अब भला

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे ।

वोह कहां से आ सकते हैं ! इतना केहना था कि अचानक दो बुजु़र्ग नुमूदार हुए उन में से एक ने बढ़ कर तल्वार से उस बदअ़क़ीदा आ़शिक़ का सर उड़ा दिया । फिर औ़रत को बमअ़ घौड़ा उस जगह लाए जहां वोह हिन्दू कटा हुवा पड़ा था । दोनों में से एक बुजु़र्ग ने कटा हुवा सर धड़ से मिला कर कहा, "قُمْ بِاِذْنِ اللهِ" या'नी उठ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ।" वोह हिन्दू उसी वक़्त ज़िन्दा हो गया । वोह दोनों बुजु़र्ग ग़ाइब हो गए । येह दोनों मियां बीवी घौड़े पर सुवार हो कर ब ख़ैरिय्यत घर लौट आए । मक़्तूल के वारिसों ने घौड़ा पहचान कर रनजीत सिंघ की कोर्ट में दोनों मियां बीवी पर केस कर दिया कि हमारा आदमी ग़ाइब है और घौड़ा इन के पास है शायद इन लोगों ने हमारे आदमी को क़त्ल कर दिया है । पेशी हुई, इन मियां बीवी ने जंगल का सारा वाक़ेआ़ केह सुनाया और कहा कि इन दोनों बुजु़र्गों में से एक बुजु़र्ग यहां के मशहूर मज्जूब गुल मुहम्मद शाह साहिब के हम शक्ल थे । चुनान्चे इन मज्जूब बुजु़र्ग को बुलाया गया । वोह तशरीफ़ ले आए और उन्हों ने आते ही अव्वल ता आख़िर सारा वाक़ेआ़ लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ बयान कर दिया । लोग हुजू़रे ग़ौसे आ'ज़म

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की येह ज़िन्दा करामत सुन कर अश अश कर उठे। रनजीत सिंघ ने मुक़द्दमा ख़ारिज करते हुए उन दोनों मियां बीवी को इन्आमो इकराम दे कर रुख़्सत किया। (अल ह़क़ाइक़ फ़िल ह़दाइक़)

अल अमां क़हर है या ग़ौस़ ! वोह तीखा तेरा
رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ौस़ुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का कुंवां

एक बार बग़दादे मुअ़ल्ला में त़ाऊ़न की बीमारी फैल गई और लोग धड़ाधड़ मरने लगे। लोगों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में इस मुस़ीबत से नजात दिलाने की दरख़्वास्त पेश की। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया, "हमारे मद्रसे के इर्दगिर्द जो घास है वोह खाओ और हमारे मद्रसे के कुंवें से पानी पियो। जो ऐसा करेगा वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर म–रज़ से शिफ़ा पाएगा।" चुनान्चे घास और कुंवें के पानी से शिफ़ा मिलनी शुरूअ़ हो गई। यहां तक कि बग़दाद शरीफ़ से त़ाऊ़न ऐसा भागा कि फिर कभी पलट कर न आया। (तफ़्रीहुल ख़ात़िर, स़–फ़ह़ा:34,35, मिस्र)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

तब्क़ातुल कुब्रा में ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का येह इर्शाद भी नक़्ल किया गया है, जिस किसी का मेरे मद्रसे से गुज़र हुवा क़ियामत के रोज़ उस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होगी।"

गुनाहों के अमराज़ की भी दवा दो
मुझे अब अ़ता हो शिफ़ा ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सत्तर बार एह़तिलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का एक मुरीद एक ही रात में नई नई औ़रत के सबब सत्तर बार मोह़तलिम हुवा। सुब्ह़ ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हो कर अपनी परेशानी की फ़रयाद ले कर अपने मुर्शिदे करीम हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ख़िदमते बा अ़ज़्मत में ह़ाज़िर हुवा। क़ब्ल इस के कि वोह कुछ अ़र्ज़ करे। सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने ख़ुद ही फ़रमाया, रात के वाक़िए से मत घबराओ मैं ने रात लौह़े मह़फ़ूज़ पर नज़र डाली तो तुम्हारे बारे में सत्तर मुख़्तलिफ़ औ़रतों के साथ ज़िना करना मुक़द्दर था। मैं ने बारगाहे

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर सौ रह़मतें भेजता है।

इलाही عَزَّوَجَلَّ में इल्तिजा की कि वोह तेरी तक़्दीर को बदल दे और इन गुनाहों से तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए। चुनान्चे इन सारे वाक़ेआ़त को ख़्वाब में एह़तिलाम की सूरत में तब्दील कर दिया गया।

(बहजतुल अस्सार व मअ़दनुल अन्वार, स़-फ़ह़ा:193)

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है

तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

इर्शादाते ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि किसी पीरे कामिल की बैअ़त ज़रूर करनी चाहिये कि पीर की तवज्जोह से मुसीबतें टल जाती हैं और बा'ज़ अवक़ात बड़ी आफ़त छोटी आफ़त से बदल कर रह जाती है। बहजतुल अस्सार में है, पीरों के पीर, पीर दस्तगीर, रौशन ज़मीर, क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, पीरे लासा़नी, क़िन्दीले नूरानी, शहबाज़े ला मकानी, अश्शैख़ अबू मुह़म्मद सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِیْ का फ़रमाने बिशारत निशान है, मुझे एक बहुत बड़ा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे मुसाह़िबों और मेरे क़ियामत तक के होने वाले मुरीदों

के नाम दर्ज थे और कहा गया कि येह सारे अफ़राद तुम्हारे ह़वाले कर दिये गए हैं। फ़रमाते हैं, मैं ने दारोग़ए जहन्नम से जब इस्तिफ़्सार किया, क्या जहन्नम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्हों ने जवाब दिया, ''नहीं।'' आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने मज़ीद फ़रमाया, मुझे अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मेरा दस्ते ह़िमायत मेरे मुरीदों पर इस त़रह़ है जिस त़रह़ आस्मान ज़मीन पर साया कुनां है। अगर मेरा मुरीद अच्छा न भी हो तो क्या हुवा। اَلۡحَمۡدُلِلّٰہِ मैं तो अच्छा हूं। मुझे अपने पालने वाले की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से न हटूंगा जब तक अपने एक एक मुरीद को दाख़िले जन्नत न करवा लूं। (ऐ़ज़न)

मुरीदों को ख़त़रा नहीं बहरे ग़म से

कि बेड़े के हैं ना ख़ुदा ग़ौ़से आ ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ज़ीमुश्शान करामत

अबुल मुज़फ़्फ़र ह़सन नामी एक ताजिर ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ह़म्माद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, ह़ुज़ूर ! मैं

तिजारत के लिये क़ाफ़िले के हमराह मुल्के शाम जा रहा हूं। आप से दुआ़ की दरख़्वास्त है। सय्यिदुना शैख़ ह़म्माद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया, "तुम अपना सफ़र मुल्तवी कर दो, अगर गए तो डाकू तुम्हारा सारा माल भी लूट लेंगे और तुम्हें भी क़त्ल कर डालेंगे।" ताजिर येह सुन कर बड़ा परेशान हुवा, इसी परेशानी के आ़लम में वापस आ रहा था कि रास्ते में हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم मिल गए। पूछा, क्यूं परेशान हो ? उस ने सारा वाक़ेआ़ केह सुनाया। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इर्शाद फ़रमाया, परेशान न हो शौक़ से मुल्के शाम का सफ़र करो। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब बेहतर हो जाएगा। चुनान्चे वोह क़ाफ़िले के साथ रवाना हो गया। उसे कारोबार में बहुत नफ़्अ़ हुवा। वोह एक हज़ार अशरफ़ियों की थैली लिये ह़ल्ब पहुंचा। इत्तिफ़ाक़न वोह अशरफ़ियों की थैली कहीं रख कर भूल गया, इसी फ़िक्र में नींद ने ग़-लबा किया और सो गया, नींद में उस ने एक डरावना ख़्वाब देखा कि डाकूओं ने क़ाफ़िले पर ह़म्ला कर के सारा माल लूट लिया है और उसे भी क़त्ल कर डाला। ख़ौफ़ के मारे उस की आंख खुल गई, घबरा कर उठा तो वहां कोई डाकू वग़ैरा न था। अब उसे

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

याद आया कि अशरफ़ियों की थैली उस ने फुलां जगह रखी है। झट वहां पहुंचा तो थैली मिल गई। खुशी खुशी बग़दाद शरीफ़ वापस आया। अब सोचने लगा कि पहले ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मिलूं या शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ? इत्तिफ़ाक़न रास्ते में ही सय्यिदुना शैख़ ह़म्माद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मिल गए और देखते ही फ़रमाने लगे, पहले जा कर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से मिलो कि वोह महबूबे रब्बानी हैं, उन्हों ने तुम्हारे ह़क़ में सत्तर बार दुआ मांगी थी तब कहीं जा कर तुम्हारी तक़्दीर बदली जिस की मैं ने ख़बर दी थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ होने वाले वाक़िए को ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की दुआ की ब-र-कत से बेदारी से ख़्वाब में मुन्तक़िल कर दिया। चुनान्चे वोह बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में ह़ाज़िर हुवा। ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने देखते ही फ़रमाया,

''वाक़ेई मैं ने तुम्हारे लिये सत्तर मरतबा दुआ मांगी थी।''

(ऐज़न, स-फ़ह़ा:64)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे।

अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई

एक ग़मगीन नौ जवान ने आ कर बारगाहे ग़ौसिय्यत में फ़रयाद की, हुज़ूर! मैं ने अपने वालिदे मर्हूम को ख़्वाब में देखा, वोह केह रहे थे, "बेटा! मैं अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला हूं, तू सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہ النّورانی की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर मेरे लिये दुआ़ की दरख़्वास्त कर।" येह सुन कर सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे़ आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया, क्या तुम्हारे अब्बा जान मेरे मद्रसे से कभी गुज़रे हैं? उस ने अ़र्ज़ किया, जी हां। बस आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ामोश हो गए। वोह नौ जवान चला गया। दूसरे रोज़ ख़ुश ख़ुश ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और केहने लगा, या मुर्शिद! आज रात वालिदे मर्हूम सब्ज़ हुल्ला (या'नी सब्ज़ लिबास) ज़ैबे तन किये ख़्वाब में तशरीफ़ लाए वोह बेह़द ख़ुश थे, केह रहे थे, "बेटा! सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہ النّورانی की ब-र-कत से मुझ से अ़ज़ाब दूर कर दिया गया है और येह सब्ज़ हुल्ला भी मिला है। मेरे प्यारे बेटे! तू उन की ख़िदमत में रहा कर।" येह सुन कर आप ने फ़रमाया, मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि जो मुसल्मान तेरे मद्रसे से

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।

गुज़रेगा उस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ की जाएगी। (ऐज़न, स-फ़्हा:194)

नज़अ़ में, ग़ोर में, मीज़ां पे सरे पुल पे कहीं
न छुटे हाथ से दामाने मुअ़ल्ला तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दे की चीख़ो पुकार

एक बार, बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में ह़ाज़िर हो कर लोगों ने अ़र्ज़ की, आ़ली जाह! "बाबुल अज्ज़" के क़ब्रिस्तान में एक क़ब्र से मुर्दे के चीख़ने की आवाज़ें आ रही हैं। हुज़ूर! कुछ करम फ़रमा दें कि बेचारे का अ़ज़ाब दूर हो जाए। आप رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيه ने इर्शाद फ़रमाया, क्या उस ने मुझ से ख़िर्क़ए ख़िलाफ़त पहना है? लोगों ने अ़र्ज़ की, हमें मा'लूम नहीं। क्या कभी वोह मेरी मजलिस में ह़ाज़िर हुवा? लोगों ने ला इ़ल्मी का इ़ज़्हार किया। फ़रमाया, क्या उस ने कभी मेरा खाना खाया? लोगों ने फिर ला इ़ल्मी का इज़हार किया। आप رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيه ने पूछा, क्या उस ने कभी मेरे पीछे नमाज़ अदा की? लोगों ने वोही जवाब दिया। आप رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيه ने ज़रा सा सरे अक़्दस झुकाया तो आप

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर जलाल व वक़ार के आसार ज़ाहिर हुए। कुछ देर के बा'द आप ने फ़रमाया, अभी अभी फ़िरिश्तों ने बताया, ‘‘इस ने आप की ज़ियारत की है और आप से इसे अ़क़ीदत भी थी लिहाज़ा अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस पर रह़म किया।’’ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र से आवाज़ें आना बन्द हो गईं। (बहजतुल अस्रार व मअ़दनुल अन्वार, स़-फ़ह़ा:194, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

Ï¢Î S¢ãè, Ó¢¢Ú S¢ãè, }¢Á¢çÚ}¢¢ Ý¢Ü¢Ú¢ S¢ãè
ã ±¢ã ÜUS¢¢ ãè S¢ãè ã ¼¢ ÜUUè}¢¢ ¼Ú¢

तालिबे ग़मे मदीना, बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
27 रबीउ़न्नूर शरीफ़ सिने 1427 हिजरी

यह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इजतिमाआ़त, अअ़्रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पम्फ्लेट तक़्सीम कर के स़वाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते स़वाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पम्फ्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''मुन्ने की लाश''

येह रिसाला (मुन्ने की लाश)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानीए

दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी ***रज़वी ज़ियाई*** دامت برکاتہم العالیہ

ने ***उर्दू*** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में मक्त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है ।

इस में अगर किसी जगह कमीबेशी पाए तो मजलिसे तराजिम को मुत्त़लअ़ फ़रमा कर स़वाब कमाइये ।

राबित़ा:- ***मजलिसे तराजिम*** (दा'वते इस्लामी)

मक्त-बतुल मदीना ®

अह़मदआबाद । ***फ़ोन:*** **079-2539 11 68**